मुझे ऐसा क्यों लगता है कि विशेष रूप से मेरे काम में, मुझे दूसरों का अनुमोदन और मान्यता प्राप्त होने की आवश्यकता है?

यह याद रखना जरूरी है कि अनुमोदन और मान्यता की जरूरत हर किसी का सवाल है। हमारे पूरे जीवन की संरचना ऐसी है कि हमें सिखाया जाता है कि जब तक हमें कोई मान्यता नहीं देता, हम बेकार हैं, ना-कुछ हैं। काम महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन मान्यता! और इससे बातें अस्तव्यस्त हो रही हैं। काम महत्वपूर्ण हो...अपने आप में एक खुशी। तुम काम करो, मान्यता प्राप्त करने के लिए नहीं वरन रचनात्मक होने का मज़ा आ रहा है इसलिए; तुम्हें काम से प्यार हो केवल काम की खातिर।

बहुत कम लोग हैं ऐसे जो विन्सेंट वानगॉग की तरह समाज के जाल से भागने में सफल रहे हैं। वह पेंटिंग करता चला गया--भूखा, बेघर, कपड़ों के बिना, दवाई के बिना, बीमार, लेकिन वह पेंटिंग करता चला गया। एक भी चित्र नहीं बेचा जा रहा था, कहीं से भी मान्यता नहीं थी, लेकिन अजीब बात यह थी कि इन परिस्थितियों में भी वह खुश था...खुश क्योंकि वह जो पेंट करना चाहता था वह पेंट करने में सक्षम था। मान्यता हो या न हो, उसका काम आंतरिक रूप से मूल्यवान है।

तैंतीस वर्ष की उम्र में उसने आत्महत्या कर ली थी; किसी दुख या पीड़ा के कारण नहीं वरन सिर्फ इसलिए क्योंकि वह अपना अंतिम चित्र चित्रित कर चुका था, जिस पर वह लगभग एक वर्ष तक काम कर रहा था--सूर्यास्त। उसने दर्जनों बार कोशिश की, लेकिन यह उसके मानक के अनुरूप नहीं था और वह इसे नष्ट कर देता। अंत में वह मनचाहा सूर्यास्त रंगने में कामयाब रहा।

उसने आत्महत्या कर ली, और अपने भाई को एक पत्र लिखा, "मैं आत्महत्या हताशा के कारण नहीं कर रहा हूं। मैं आत्महत्या कर रहा हूं क्योंकि अब यहां रहने में कोई मतलब नहीं है, मेरा काम हो गया। इसके अलावा, मेरी आजीविका के लिए साधन खोजने मुश्किल है। लेकिन यह ठीक था, क्योंकि मैं कुछ काम करना चाहता था, मुझमें कुछ संभावना थी जो वास्तविक बनाने की जरूरत थी। यह खिल गई है, इसलिए अब एक भिखारी की तरह रहना व्यर्थ है।

"अब तक मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था, मैंने इसे देखा भी नहीं था। लेकिन अब केवल यही एक चीज है। मैं अपनी अधिकतम संभावना के साथ खिला हूं, मैं कृतकृत्य हूं और अब महज घिसटना, आजीविका के लिए उपायों की खोज करना सिर्फ मूर्खता लगता है। किसलिए? तो यह एक आत्महत्या नहीं है मेरे अनुसार, सिर्फ इतना ही कि मैं एक पूर्णता प्राप्त कर चुका हूं, एक पूर्ण विराम, और मैं आनंद से दुनिया छोड़ रहा हूं। मैं आनंद से रहा, आनंद से मैं दुनिया छोड़ रहा हूं।"

अब, लगभग एक सदी बाद उसके प्रत्येक चित्र की कीमत लाखों डॉलर है। केवल दो सौ चित्र उपलब्ध हैं। उसने हजारों चित्रित किए होंगे, लेकिन वे नष्ट हो गए, किसी ने उनकी कोई दखल नहीं ली।

अब तुम्हारे पास वानगॉग का एक चित्र होने का मतलब है कि तुममें सौंदर्य बोध है। उसकी चित्रकला तुम्हें एक मान्यता देती है। उसके काम के लिए दुनिया के किसी भी शख्स ने मान्यता नहीं दी, लेकिन उसे परवाह नहीं थी। और चीजों को देखने का यही तरीका होना चाहिए।

तुम काम करते हो यदि तुम इससे प्यार करते हो। मान्यता के लिए मत पूछो। यदि यह आती है, इसे सरलता से ले लो, अगर यह नहीं आती है, तो इसके बारे में सोचो मत। तुम्हारी संतुष्टि काम पूरा करने में ही होनी चाहिए। और अगर सब लोग अपने काम से प्यार करने की इस सरल कला को सीखते हैं, जो कुछ भी हो, किसी भी मान्यता की चाह के बिना, इसका आनंद लें, तो हम एक और अधिक सुंदर और उत्सवपूर्ण दुनिया बनाएंगे। वैसे भी, दुनिया ने तुम्हें एक दयनीय ढांचे में फंसा दिया है: तुम क्या कर रहे हो वह इसलिए ठीक नहीं है क्योंकि तुम इससे प्रेम करते हो या तुम इसे पूरी तरह से करते हो, वरन इसलिए क्योंकि विश्व इसे मान्यता देता है, पुरस्कार देता है, तुम्हें स्वर्ण पदक और नोबेल पुरस्कार देता है।

उन्होंने रचनात्मकता के पूरे आंतरिक मूल्य को छीन लिया है और लाखों लोगों को नष्ट कर दिया--क्योंकि तुम लाखों लोगों को नोबल पुरस्कार नहीं दे सकते। और तुमने सब में मान्यता के लिए इच्छा पैदा की है, तो कोई भी शांति से, चुपचाप काम नहीं कर सकता, महज काम का आनंद लेने के लिए। और जीवन छोटी-छोटी बातों से बनता है। उन छोटी बातों के लिए कोई पुरस्कार, सरकारों द्वारा दिए गए शीर्षक, या विश्वविद्यालयों द्वारा मानद डिग्री नहीं दी जाती।

इस सदी के महान कवियों में से एक रवींद्रनाथ टैगोर, बंगाल में रहते थे। उन्होंने अपनी कविता, अपने उपन्यास, बांग्ला में प्रकाशित किए थे--लेकिन उन्हें कोई मान्यता नहीं मिली। फिर एक छोटी सी किताब, गीतांजलि का अनुवाद, अंग्रेजी में किया। और उन्हें पता था कि मूल काव्य में जो सौंदर्य है वह अनुवाद में नहीं है और नहीं हो सकता। क्योंकि इन दो भाषाओं, बंगाली और अंग्रेजी, की विभिन्न अभिव्यक्ति है, अलग-अलग तरीकों से संरचना है।

बंगाली बहुत प्यारी है। तुम अगर लड़ाई भी करो, ऐसा लगता है कि तुम एक अच्छी बातचीत में लगे हुए हो। यह बहुत ही संगीतमय है, प्रत्येक शब्द संगीत है। यह गुणवत्ता अंग्रेजी में नहीं है, और लायी भी नहीं जा सकती, उसमें अलग गुण हैं। लेकिन किसी तरह वे इसके अनुवाद में असफल रहे, और अनुवाद--जो मूल की तुलना में काफी कमजोर है--को नोबल पुरस्कार मिला। फिर अचानक पूरा भारत जान गया...पुस्तक वर्षों तक बांग्ला में, अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध थी, और किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

हर विश्वविद्यालय उन्हें डी. लिट देना चाहता था। कलकत्ता, जहां वे रहते थे, स्वभावत: पहला विश्वविद्यालय था, जिसने उन्हें मानद डिग्री प्रदान करनी चाही। उहोंने मना कर दिया । उन्होंने कहा, "आप मेरे लिए डिग्री नहीं दे रहे हैं, आप मेरे काम को मान्यता नहीं दे रहे हैं, आप नोबेल पुरस्कार के लिए मान्यता दे रहे

हैं, क्योंकि यह किताब कहीं अधिक सुंदर तरीके से यहां उपलब्ध थी, और किसी ने इसका मूल्यांकन नहीं किया।"

उन्होंने कोई भी डी. लिट लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, "ज्यां पॉल सार्त्र, एक महान उपन्यासकार, और मानव मनोविज्ञान में जबरदस्त अंतर्दृष्टि का एक आदमी था, जिसने नोबेल पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया। उसने कहा, यह मेरे लिए अपमान है।" उसने कहा, "जब मैंने अपने काम का निर्माण किया वही मेरे लिए काफी पुरस्कार था। नोबेल पुरस्कार इसमें कुछ भी नहीं जोड़ सकता, इसके विपरीत, यह मुझे नीचे खींचता है। यह नौसिखिये, जो पहचान की तलाश में हैं उनके लिए अच्छा है, मैं काफी प्रौढ़ हूं, और मैंने बहुत आनंद लिया है। मैंने जो कुछ भी किया वह खूब प्रेम से किया, और यह अपने आपमें एक पुरस्कार था, और मैं कोई भी अन्य पुरस्कार नहीं चाहता क्योंकि कुछ भी उसकी तुलना में बेहतर नहीं जो कि मैं पहले से ही प्राप्त कर चुका हूं।"

और वह सही था। लेकिन दुनिया में सही लोग बहुत कम हैं, और दुनिया जाल में फंसे हुए गलत लोगों से भरी है।

तुम मान्यता के बारे में परेशान क्यों होते हो? मान्यता के बारे में परेशान होना तभी सार्थक है अगर तुम अपने काम से प्रेम नहीं करते, तो यह सार्थक है, तो यह विकल्प लगता है। तुम जो कर रहे हो उसे पसंद नहीं करते, उससे नफरत करते हो, लेकिन तुम यह कर रहे हो क्योंकि तुम्हें मान्यता मिलेगी, तुम्हारी सराहना की जाएगी, तुम स्वीकृत होओगे। बल्कि मान्यता के बारे में सोचने की बजाय अपने काम पर पुनर्विचार करो। क्या तुम इसे पसंद करते हो?...तो बात खत्म हो गई। यदि तुम इसे पसंद नहीं करते, तो इसे बदल दो।

माता-पिता, शिक्षक हमेशा आग्रह पूर्वक कहते हैं कि तुम्हें मान्यता मिलनी चाहिए, तुम स्वीकृत होने चाहिए। लोगों को नियंत्रण में रखने की यह एक बहुत ही चालाक रणनीति है।

मेरे विश्वविद्यालय में मुझसे बार-बार कहा जाता था, "तुम ये बातें बंद करो...तुम सवाल पूछते रहते हो और तुम्हें अच्छी तरह पता है कि इनका जवाब नहीं है, और जो प्रोफेसर को शर्मनाक स्थिति में डाल देते हैं। तुम्हें इसे रोकना होगा, अन्यथा ये लोग बदला लेंगे। वे सत्ता में हैं, वे तुम्हें फेल कर सकते हैं।"

मैंने कहा, "मैं इसकी फिक्र नहीं करता। मैं अभी आनंद ले रहा हूं उनसे सवाल पूछने का और उन्हें महसूस कराने का कि वे अज्ञानी हैं। उनके पास इतना साहस नहीं है कि वे कहें, 'मैं नहीं जानता'; तब कोई परेशानी नहीं होगी। लेकिन वे ढोंग करते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं। मैं इसका आनंद ले रहा हूं, मेरी बुद्धि पर धार रखी जा रही है। परीक्षा के बारे में किसे परवाह है? वे मुझे फेल करेंगे अगर मैं परीक्षाओं में शामिल होऊंगा, लेकिन यहां शामिल कौन होने वाला है ? यदि वे सोचते हैं कि वे मुझे उत्तीर्ण नहीं करेंगे तो मैं परीक्षा में प्रवेश नहीं करूंगा और मैं एक ही कक्षा में रहूंगा। उन्हें मुझे सिर्फ डर के मारे पास करना होगा कि एक साल के लिए उन्हें फिर मुझसे सामना करना होगा होगा।"

और उन सभी ने मुझे उत्तीर्ण कर दिया, क्योंकि वे मुझसे छुटकारा पाना चाहते थे। उनकी नजर में मैं अन्य छात्रों को भी भ्रष्ट कर रहा था, क्योंकि अन्य छात्रों ने वे बातें पूछना शुरू कर दिया जो सदियों तक बिना किसी प्रश्न के स्वीकार कर ली गई थीं।

जब मैं विश्वविद्यालय में अध्यापन कर रहा था, तो वही बात एक अलग कोण से उभर आई। अब मैं छात्रों से सवाल पूछ रहा था उनके ध्यान में लाने के लिए कि सभी ज्ञान जो वे इकट्ठे हुए हैं वह उधार है, और उन्हें कुछ भी नहीं पता। मैंने उन्हें कहा कि मुझे उनकी डिग्री के बारे में फिक्र नहीं है, मुझे उनके प्रामाणिक अनुभव की फिक्र है--और वह उन्हें जरा भी नहीं है। वे केवल किताबें दोहरा रहे हैं जो पुरानी पड़ चुकी हैं, बहुत पहले वे गलत साबित हुई हैं। अब विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने मुझे धमकी देनी शुरू की, "अगर आप इस तरह से छात्रों को परेशान करना जारी रखेंगे तो विश्वविद्यालय से आपको निकाल दिया जाएगा।"

मैंने कहा, "यह अजीब है--मैं एक छात्र था और मैं प्रोफेसरों को प्रश्न नहीं पूछ सकता था, अब मैं एक प्रोफेसर हूं और मैं छात्रों को प्रश्न नहीं पूछ सकता। तो इस विश्वविद्यालय का कार्य क्या है? यह एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहां सवाल पूछा जाता है, और खोज शुरू होती है। उत्तरों को जिंदगी में और अस्तित्व में पाया जाता है, पुस्तकों में नहीं।"

मैंने कहा, "आप मुझे विश्वविद्यालय से बाहर निकाल सकते हैं, लेकिन याद रखना, ये ही छात्र, जिनकी वजह से आप मुझे विश्वविद्यालय के बाहर फेंक रहे हैं, पूरे विश्वविद्यालय को जला देंगे।" मैंने कुलपति से कहा, "आप आइए और मेरी कक्षा देखिए।"

उन्हें विश्वास नहीं हुआ: मेरी कक्षा में कम से कम दो सौ छात्र थे और वहां कोई खाली स्थान नहीं था, इसलिए वे जहां जगह मिले वहां बैठे थे--खिड़कियों पर, फर्श पर। उन्होंने कहा, "यह क्या हो रहा है? तुम्हारे तो केवल दस छात्र हैं।"

मैंने कहा, "ये लोग सुनने आते हैं। उन्होंने अपनी कक्षाओं को छोड़ दिया, और उन्हें यहां अच्छा लगता है। यह कक्षा एक संवाद है। मैं उनसे श्रेष्ठ नहीं हूं, और मैं किसी को जो मेरी कक्षा के लिए आता है, मना नहीं कर सकता। चाहे वह मेरा छात्र हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर वह मेरी बात सुनने के लिए आता है तो वह मेरा छात्र है। सच तो यह है कि आपको मुझे सभागार लेने की अनुमति देनी चाहिए । ये कक्षाएं मेरे लिए बहुत छोटी हैं।"

उन्होंने कहा, "सभागार? तुम्हारा मतलब है कि पूरे विश्वविद्यालय को सभागार में इकट्ठा किया जाए? तब अन्य प्रोफेसर क्या करेंगे? "

मैंने कहा, "यह उन्हें सोचना चाहिए। वे जाकर अपने गले में फांसी लगा लें। उन्हें इसे बहुत पहले कर लेना चाहिए था यह देखकर कि उनके छात्र उन्हें सुनना नहीं चाहते, यह पर्याप्त संकेत था।"

प्रोफेसर क्रोधित थे, अधिकारी नाराज थे। अंत में उन्हें मुझे सभागार देना पड़ा...लेकिन बहुत अनिच्छा से, क्योंकि छात्र उन्हें मजबूर कर रहे थे। लेकिन उन्होंने कहा, "यह अजीब है, जिन छात्रों को दर्शन, धर्म या मनोविज्ञान के साथ कुछ लेना-देना नहीं है, उन्हें वहां क्यों जाना चाहिए?"

कई छात्रों ने कुलपति से कहा, "हमें यह बहुत अच्छा लगता है। हम नहीं जानते थे कि धर्म, दर्शन, मनोविज्ञान इतना दिलचस्प हो सकता है, इतना रसपूर्ण है अन्यथा हम उनमें शामिल हो जाते। हमने सोचा कि ये शुष्क विषय हैं, केवल बहुत किताबी लोग इन विषयों को पढ़ते हैं। हमने किन्हीं रसदार लोगों को इन विषयों में शामिल होते हुए कभी नहीं देखा। लेकिन इस आदमी ने इन विषयों को इतना महत्वपूर्ण बनाया है कि ऐसा लगता है कि भले ही हम अपने विषयों में असफल हों, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हम जो कर रहे हैं वह अपने आप में इतना सही है, और हम इसके बारे में इतने स्पष्ट हैं कि इसे बदलने का कोई सवाल ही नहीं है।"

मान्यता के खिलाफ, स्वीकृति के खिलाफ, डिग्री के खिलाफ...लेकिन अंत में मैंने विश्वविद्यालय छोड़ दिया, उनकी धमकियों की वजह से नहीं, लेकिन मैंने देखा कि अगर हजारों छात्रों को मेरे द्वारा मदद की जा सकती है, तो यह एक अपव्यय है। मैं बाहर दुनिया के लाखों लोगों को मदद कर सकता हूं। मैं एक छोटे से विश्वविद्यालय से क्यों जुड़ा रहूं? सारी दुनिया मेरा विश्वविद्यालय हो सकता है।

और तुम देख सकते हो: मेरी निंदा की गई है। यह एकमात्र मान्यता है जो मुझे मिली।

मुझे हर तरह से गलत प्रस्तुत किया गया है। एक आदमी के खिलाफ जो कुछ कहा जा सकता है वह सब मेरे खिलाफ कहा गया है, वह सब जो एक आदमी के खिलाफ किया जा सकता है, मेरे खिलाफ किया गया है। क्या तुम्हें लगता है कि यह मान्यता है? लेकिन मैं अपने काम से प्रेम करता हूं। मैं इसे इतना प्रेम करता हूं कि मैं इसे काम भी नहीं कह सकता, मैं इसे सिर्फ मेरी खुशी कहता हूं।

और सब लोग जो किसी न किसी रूप में मुझसे बड़े थे, मान्यता प्राप्त थे, मुझसे कहते, "तुम जो कर रहे हो उससे दुनिया में कोई भी तुम्हें सम्मान देने वाला नहीं है।" लेकिन मैंने कहा, "मैंने इसे कभी नहीं मांगा है, और मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रतिष्ठा को लेकर मैं क्या करूंगा? मैं इसे खा नहीं सकता, मैं इसे पी नहीं सकता।" एक बुनियादी बात को समझो: तुम जो करना चाहते हो, जिस काम से तुम्हें प्यार है, उसे करो और मान्यता के लिए कभी नहीं पूछना। यह भीख मांगने जैसा है। मान्यता के लिए क्यों तरसना? स्वीकृति के लिए क्यों लालायित होना?

अपने भीतर गहरे देखो। शायद तुम जो कर रहे हो उसे तुम नहीं चाहते; शायद तुम डरते हो कि तुम गलत रास्ते पर हो। स्वीकृति से तुम्हें यह महसूस करने में मदद मिलेगी कि तुम सही हो। मान्यता तुम्हें यह अहसास देगी कि तुम सही दिशा में जा रहे हो।

सवाल अपने भीतर की भावनाओं का होता है, इसका बाहरी दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। और क्यों दूसरों पर निर्भर रहना? ये सभी चीजें दूसरों पर निर्भर करती हैं--तुम स्वयं किसी पर निर्भर हो रहे हो।

मैं कोई भी नोबेल पुरस्कार स्वीकार नहीं करूंगा। दुनिया भर के सभी देशों से, सभी धर्मों से हो रही निंदा मेरे लिए अधिक मूल्यवान है। नोबल पुरस्कार स्वीकार करने का मतलब है मैं निर्भर होता जा रहा हूं, अब मैं अपने आप पर गर्व नहीं करूंगा वरन नोबेल पुरस्कार पर गर्व करूंगा। अभी मैं सिर्फ अपने आप पर गर्व कर सकता हूं, और कुछ नहीं है जिस पर गर्व किया जा सकता है।

इस तरह तुम एक व्यक्ति बनते हो। और एक ऐसा व्यक्ति होना जो संपूर्ण स्वतंत्रता में जीए, अपने पैरों पर खड़े हो, अपने खुद के स्रोतों से पीए, आदमी को केंद्रित करता है, जड़ें देता है। यह उसके परम खिलावट की शुरुआत है।

ये तथाकथित मान्यता प्राप्त लोग, सम्मानित लोग, कूड़े-करकट से भरे हैं और कुछ नहीं। वे बकवास से भरे हुए हैं जैसा कि समाज चाहता है कि वे हों...और समाज उन्हें बदले में पुरस्कार देकर सम्मानित करता है।

कोई भी आदमी जिसे अपनी निजता का ख्याल है, स्वयं के प्रेम से, अपने काम से जीता है, बिना इसकी फिक्र किए कि दूसरों को क्या लगता है। जितना अधिक मूल्यवान तुम्हारा काम है, उतना ही इसके लिए सम्मान मिलने की संभावना कम है। और अगर तुम्हारा काम एक जीनियस का काम है तो अपने जीवन में इसके लिए कोई सम्मान नहीं देख पाओगे। तुम्हारे जीवन में तुम्हारी निंदा की जाएगा...दो या तीन शताब्दियों के बाद तुम्हारी मूर्तियां बनाई जाएंगी, तुम्हारी पुस्तकों का सम्मान किया जाएगा। क्योंकि मानवता के लिए लगभग दो या तीन सदियां लगती हैं उतनी प्रतिभा विकसित करने के लिए जितनी कि किसी जीनियस में आज है। दोनों के बीच का अंतर विशाल है।

बेवकूफों द्वारा सम्मानित होने के लिए तुम्हें उनके शिष्टाचार, उनकी अपेक्षाओं के अनुसार उनसे अधिक बीमार होना चाहिए; तभी वे तुम्हारा सम्मान करेंगे। लेकिन तुम्हें क्या मिलेगा? तुम अपनी आत्मा को खो दोगे और तुम्हें कुछ भी हासिल नहीं होगा।